विद्या भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठ: द्वितीय: पाठनाम स्वर्णकाक:

ता: 06-05-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- प्रातस्तत्र गत्वा सा काकं निर्भर्त्सयन्ती प्रावोचत्- भो नीचकाक ! अहमागता ,मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ ।काकोब्रवीत अहम् त्वत्कृते सोपानमुत्तारयामि। तत्कथय स्वर्णमयं रजतमयं वा ।
- शब्दार्थ –
  निर्भर्त्सयन्ती - भला -बुरा कहते हुए , प्रावोचत् –बोली
  आगता –आ गई ,मह्यम - मुझे ,त्वत्कृते - तुम्हारे लिए
  सोपानम् –सीढ़ी को , उत्तारयामि -उतारता हूँ
  तत्कथय –तो कहो
- सुबह वहां जाकर वह कव्वे को बड़ा बुरा भला कहती हुई बोली -हे नीच कौए! मैं आ गई हूं, मुझे चावलों का मूल्य दो ।कौवा बोला -मैं तुम्हारे लिए सीढ़ी उतारता हूं ।तो कहो(बताओ) सोने से बनी हुई, चांदी से बनी हुई अथवा ताम्बे से बनी हुई?